जेंडर समावेशन और पाठ्यपुस्तकें

रेखा रानी कपूर*

जेंडर एक सामाजिक अवधारणा है। विगत कुछ वर्षों से पाठ्यपुस्तकों में जेंडर समावेशन का मुद्दा अत्यंत ज्वलंत रहा है। यद्यपि राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा —2005 के अनुसार पाठ्यपुस्तकों को ज्ञान प्राप्ति के एकमात्र या अंतिम स्रोत के रूप में नहीं देखना चाहिए, किंतु वास्तविकता यह है कि हमारे देश में अधिकांशत: पाठ्यपुस्तकें ही ज्ञान का महत्वपूर्ण साधन हैं। इस संदर्भ में यह प्रश्न अत्यंत अनिवार्य है कि पाठ्यपुस्तकों में सम्मिलित सामग्री ज्ञानवर्धक, रोचक, सुग्राहय, सृजनात्मक व चिंतन कौशलों को विकसित करने वाली हो। यदि हम समावेशी शिक्षा के लक्ष्य की प्राप्ति करना चाहते हैं तो पाठ्यपुस्तकों का निर्माण करते समय हमें हाशिये पर जीवनयापन कर रहे वर्गों, सामाजिक-आर्थिक दृष्टि से शोषित जन, दलित चेतना और स्त्री विमर्श के परिप्रेक्ष्य में पाठ्य सामग्री का संकलन करना चाहिए। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा निर्मित माध्यमिक व उच्चतर माध्यमिक स्तर की हिंदी की पाठ्यपुस्तकों और उच्चतर माध्यमिक स्तर की अंग्रेज़ी की पाठ्यपुस्तकों में जेंडर को किस प्रकार प्रस्तुत किया गया है, शोध-पत्र का प्रथम भाग इस पर विस्तृत विवेचन प्रस्तुत करता है। शोध-पत्र के द्वितीय भाग में जेंडर समावेशन हेतु सुझावों को प्रस्तुत किया गया है, जिससे जेंडर समावेशन को पाठ्यपुस्तकों के अभिन्न व अविच्छिन्न अंग के रूप में प्रस्तुत किया जा सके।

भूमिका

"शिक्षा में जेंडर के मुद्दों" पर राष्ट्रीय फ़ोकस समूह के आधार पत्र के अनुसार 'विद्यालय वस्तुत: समाजीकरण की जेंडर असमानता और सामाजिक नियंत्रण को पुनर्बलित करते हैं, अतएव विद्यालय स्वयं उन सीमाओं का सृजन करते हैं जो संभावनाओं को प्रतिबंधित करते हैं।' 1980 और 1990 के दशकों की पाठ्यपुस्तकों की सामग्री में जेंडर पूर्वाग्रह व अभिमत स्पष्टत: प्रदर्शित होते हैं जो लड़कों को सक्रिय रूप में और लड़कियों को निष्क्रय रूप में (मुख्यत: घरेलू कार्यों के संदर्भ में) चित्रित करते हैं। अतएव इस बात का विश्लेषण करना ज़रूरी है कि ज्ञान उत्पादन की प्रक्रिया के दौरान विद्यालयी पाठ्यपुस्तकों में जेंडर अवधारणाओं का किस प्रकार स्पष्टीकरण किया जाता है। प्रस्तुत शोध-पत्र में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा निर्मित पाठ्यपुस्तकों का जेंडर समावेशन के संदर्भ में सारगर्भित विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

* *शोधार्थी,* शिक्षा संकाय, आई.ए.एस.ई., जामिया मिल्लिया इस्लामिया, दिल्ली 110018

हिंदी — कक्षा 6
वसंत भाग-1

पुस्तक में संकलित पाठों में महिला रचनाकार

पुस्तक में संकलित 17 पाठों में से, पाँच पाठ महिला रचनाकारों द्वारा रचित हैं जिनमें एक पाठ केवल पढ़ने के लिए है तथा कवयित्री द्वारा रचित कविता को संकलित किया गया है।

जेंडर पूर्वाग्रह से संबंधित मुद्दे

सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा रचित कविता 'झाँसी की रानी' की पंक्तियाँ हैं —

'बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।'

कविता में प्रस्तुत शब्द 'मर्दानी' यह प्रश्न चिह्न लगाता है कि क्या वीरता, साहस, शौर्य को पुरुष जाति से संबंधित करके ही देखना चाहिए? क्या यह शब्द पुरुषवाचक विश्लेषण के रूप में प्रचलित जेंडर पूर्वाग्रह को पुनर्बलित कर रहा है?

महिला सशक्तीकरण का संदेश

हेलेन केलर द्वारा लिखित पाठ 'जो देखकर भी नहीं देखते' शारीरिक रूप से चुनौतीपूर्ण व्यक्तियों की समस्याओं को मार्मिक रूप में व्यक्त करता है और इन व्यक्तियों के प्रति सामाजिक संकीर्णता, समाज के पूर्वाग्रह व उनकी संवेदनहीनता पर कुठाराघात करता है। पाठ में दर्शाया गया है कि दिव्यांगता मात्र एक शारीरिक संप्रत्यय/अवरोध नहीं हैं, वरन् इसे सामाजिक अवधारणा/अवरोध के रूप में देखने की नितांत आवश्यकता है, ताकि जनमानस में दिव्यांग व्यक्तियों के प्रति दया या करुणा के भाव की अपेक्षा तदानुभूति का भाव विकसित हो। 'लेखिका के बारे में' उनके लघु जीवनवृत्त का उल्लेख है, जिससे उनकी आशावादिता, ऊर्जास्विता व सकारात्मक अभिवृत्ति का बोध होता है। उन्होंने अपनी आत्मकथा को प्रकाशित किया, जिसका अनुवाद विश्व की लगभग सभी भाषाओं में किया गया है। उन्होंने दस पुस्तकें और सैंकड़ों लेख लिखे जो शारीरिक रूप से चुनौतीपूर्ण व्यक्तियों के लिए प्रेरणास्पद हैं।

बाल रामकथा — कक्षा 6 के लिए हिंदी की पूरक पाठ्यपुस्तक

जेंडर पूर्वाग्रह से संबंधित मुद्दे

हिंदी की पूरक पाठ्यपुस्तक *बाल रामकथा* में सीता को एक कर्त्तव्यशील, त्यागमयी व पतिव्रता स्त्री के रूप में चित्रित किया गया है। वह रावण की अशोक वाटिका में अश्रु बहाकर अपना समय व्यतीत कर रही है। किंतु उनके साहस, धैर्य, दृढ़ संकल्प शक्ति, निर्भयता का पर्याप्त उल्लेख नहीं मिलता है। वस्तुत: यह सीता की निर्भयता थी कि उसने रावण का अहंकार और मिथ्या गर्व अपने व्यंग्य बाणों से आहत कर दिया। राक्षसियों से भरी वाटिका में उन्होंने निर्भय होकर राम के प्रति एकनिष्ठ प्रेम और पतिव्रत धर्म का पालन किया। वास्तव में रावण का अहंकार तो सीता की व्यंगयुक्तियों से ही चूर-चूर हो गया। सीता के इस सशक्त पक्ष पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया गया है, वरन् सीता को राम पर पूर्णत: आश्रित, डरी और सहमी स्त्री के रूप में प्रस्तुत किया गया है। पुस्तक में वर्णित निम्नलिखित पंक्तियाँ उल्लेखनीय हैं —

'रावण ने सब कुछ किया पर सीता का मन नहीं बदला। वे बार-बार राम का नाम लेती थीं। शेरों के बीच हिरणी की तरह बैठी रहती थीं, डरी-सहमी। रो-रोकर दिन काट रही थीं। सोने के हिरण ने उन्हें सोने की लंका में पहुँचा दिया था। यहाँ से उन्हें राम ही बचा सकते थे।' (पृ. सं.47)

हिंदी — कक्षा 7
वसंत भाग-2

पुस्तक में संकलित पाठों में महिला रचनाकार

पुस्तक के कुल 20 पाठों में से मात्र तीन पाठ महिला लेखकों द्वारा रचित हैं। जिनमें केवल एक कविता कवयित्री द्वारा रचित है।

जेंडर पूर्वाग्रह से संबंधित मुद्दे

भवानीप्रसाद मिश्र द्वारा रचित कविता 'कठपुतली' एक प्रतीकात्मक कविता है। जो यह दर्शाती है कि पुरुष प्रधान समाज में स्त्रियाँ मात्र एक कठपुतली के रूप में अपने जीवन का निर्वाह कर रही हैं। कविता के साथ प्रस्तुत एक चित्र में एक महिला को कठपुतली के रूप में चित्रित किया गया है, जिसके धागे एक व्यक्ति (स्पष्टत: पुरुष) द्वारा नियंत्रित हैं। जेंडर असमानता को निम्न पंक्तियाँ प्रदर्शित करती हैं —

'ये धागे क्यों हैं मेरे पीछे-आगे?
इन्हें तोड़ दो; मुझे मेरे पाँवों पर छोड़ दो।
मगर...पहली कठपुतली सोचने लगी-
ये कैसी इच्छा मेरे मन में जगी?'

बाल महाभारत कथा
कक्षा 7 के लिए हिंदी की पूरक पाठ्यपुस्तक

जेंडर पूर्वाग्रह से संबंधित मुद्दे

द्रौपदी चीर-हरण के समय द्रौपदी द्वारा कही गई पंक्तियाँ नारी प्रताड़ना के संदर्भ में विशेष उल्लेखनीय हैं। आज्ञा पाकर प्रातिकामी (दुर्योधन का सारथी) रनवास में गया और द्रौपदी से बोला — 'द्रुपदराज की पुत्री! चौसर के खेल में युधिष्ठर आपको दाँव में हार बैठे हैं। आप अब राजा दुर्योधन के अधीन हो गई हैं। राजा की आज्ञा है कि अब आपको धृतराष्ट्र के महल में दासी का काम करना है। मैं आपको ले जाने के लिए आया हूँ। सारथी ने जुए के खेल में जो कुछ हुआ था, उसका सारा हाल कह सुनाया।' (पृ.स.40)

वह प्रातिकामी से बोली – "रथवान! जाकर उन हारने वाले जुए के खिलाड़ी से पूछो कि पहले वह अपने को हारे थे या मुझे? सारी सभा में यह प्रश्न उनसे करना और जो उत्तर मिले, वह मुझे आकर बताओ। उसके बाद मुझे ले जाना।"

द्रौपदी का यह प्रश्न नारी अधिकारों के प्रति संचेतना की सशक्त अभिव्यक्ति है, कि नारी क्या पुरुष की संपत्ति है? जिसे दाँव पर लगाए जाने का अधिकार उसके पति को है।

हिंदी — कक्षा 8
वसंत भाग-3

पुस्तक में संकलित पाठों में महिला रचनाकार

आठवीं कक्षा की हिंदी की पाठ्यपुस्तक में कुल 18 पाठ दिए गए हैं, जिनमें आठ कविताओं में से केवल दो कविताएँ कवयित्रियों द्वारा रचित हैं। इन दो कविताओं में से एक कविता केवल पढ़ने के लिए है।

जेंडर पूर्वाग्रह से संबंधित मुद्दे

कविता 'पिता के बाद' जेंडर पूर्वाग्रह व परंपरागत जेंडर भूमिकाओं पर करारा व्यंग्य है। कविता में लड़कियों के स्नेह, ममता, त्याग, कर्त्तव्यनिष्ठा, समर्पण भाव, कर्त्तव्य बोध इत्यादि गुणों को प्रभावी ढंग से अभिव्यक्त किया गया है। साथ ही, कविता उस संकीर्ण मानसिकता का भी विरोध करती है, जो लड़कों को ही पिता के उत्तराधिकारी के रूप में देखती है।

'लड़कियाँ खिलखिलाती हैं तेज़ धूप में,
लड़कियाँ खिलखिलाती हैं तेज़ बारिश में,
लड़कियाँ हँसती हैं हर मौसम में।
लड़कियाँ पिता के बाद संभालती हैं
पिता के पिता से मिली दुकान,
लड़कियाँ वारिस हैं पिता की।
लड़कियों ने समेट लिया
माँ को पिता के बाद,
लड़कियाँ होती हैं माँ।
दुकान पर बैठ लड़कियाँ
सुनती हैं पूर्वजों की प्रतिध्वनियाँ,
उदास गीतों में वे ढूँढ लेती हैं जीवन राग,
धूप में, बारिश में,
हर मौसम में खिलखिलाती हैं लड़कियाँ।'
(पृ.सं.79)

महिला सशक्तीकरण का संदेश

पाठ 'जहाँ पहिया है' में चित्रित तीन चित्रों में महिलाओं को साइकिल चलाते दिखाया गया है। पाठ में प्रभावी ढंग से चित्रित किया गया है कि किस प्रकार महिलाओं द्वारा साइकिल चलाने से एक सामाजिक आंदोलन का रूप ग्रहण हुआ? जिसने महिलाओं को आत्मनिर्भर व आर्थिक रूप से सुरक्षित बनाया।

'पुडुकोट्टई (तमिलनाडु में) — साइकिल चलाना एक सामाजिक आंदोलन है 'पिछले दिनों यहाँ की ग्रामीण महिलाओं ने अपनी स्वाधीनता, आज़ादी और गतिशीलता को अभिव्यक्त करने के लिए प्रतीक के रूप में साइकिल को चुना है।' (पृ. सं. 71)

'फातिमा ने बताया कि साइकिल चलाने में एक खास तरह की आज़ादी है। हमें किसी पर निर्भर नहीं रहना पड़ता। मैं कभी इसे नहीं छोड़ूँगी।' (पृ. सं. 72)

'इस जिले में साइकिल की धूम मची हुई है। इसकी प्रशंसकों में हैं महिला खेतिहर मज़दूर, पत्थर खदानों में मज़दूरी करने वाली औरतें और गाँवों में काम करने वाली नर्सें। बालवाड़ी और आँगनवाड़ी कार्यकर्ता, बेशकीमती पत्थरों को तराशने में लगी औरतें और स्कूल की अध्यापिकाएँ भी साइकिल का जमकर इस्तेमाल कर रही हैं। ग्राम सेविकाएँ और दोपहर का भोजन पहुँचाने वाली औरतें भी पीछे नहीं हैं। सबसे बड़ी संख्या उन लोगों की है जो अभी नवसाक्षर हुई हैं। जिस किसी नवसाक्षर अथवा नयी-नयी साइकिल चलाने वाली महिला से मैंने बातचीत की, उसने साइकिल चलाने और अपनी व्यक्तिगत आज़ादी के बीच एक सीधा संबंध बताया।' (पृ. सं. 72)

पाठ में साइकिल आंदोलन का उल्लेख किया गया है जो ग्रामीण महिलाओं के लिए सशक्तीकरण का एक हथियार है।

हिंदी — कक्षा 9

स्पर्श भाग-1, कक्षा 9 के लिए हिंदी (द्वितीय भाषा) की पाठ्यपुस्तक

पुस्तक में संकलित पाठों में महिला रचनाकार

गद्य खंड में संकलित आठ पाठों में मात्र एक पाठ लेखिका द्वारा रचित है। काव्य खंड के सात पाठों में किसी भी ऐसी कविता/गीत को संकलित नहीं किया गया है, जो कवयित्री द्वारा रचित हो। 'संचयन' कक्षा 9 के लिए हिंदी 'ब' (द्वितीय भाषा) की पूरक पाठ्यपुस्तक में कुल छह पाठ संकलित हैं, जिसमें से एक पाठ महादेवी वर्मा द्वारा रचित है।

महिला सशक्तीकरण का संदेश

बछेंद्री पाल द्वारा रचित पर्वतारोहण यात्रा के विवरण से अंश 'एवरेस्ट — मेरी शिखर यात्रा' उनके अदम्य साहस, धैर्य व संकल्पशक्ति की गाथा को प्रस्तुत करता है। बछेंद्री पाल ने साहसिक पर्वतारोहण यात्रा कर इस मिथक को दूर किया कि लड़कियाँ नाज़ुक और कोमल होती हैं। पाठ के आरंभ में दी गई उनकी जीवनी में स्पष्ट किया गया है कि निर्धनता और विषम परिस्थितियों के बावजूद उन्होंने हिम्मत नहीं हारी और एवरेस्ट पर विजय पाने वाली पहली भारतीय पर्वतारोही बनीं। बचपन में उनके बड़े भाई द्वारा उन्हें पहाड़ पर चढ़ने के लिए मना करना और उनसे छह साल छोटे भाई को पहाड़ पर चढ़ने के लिए प्रेरित करना जेंडर पूर्वाग्रह व परंपरागत जेंडर भूमिकाओं की संकुचित व संकीर्ण मानसिकता को दर्शाता है। पाठ लड़कियों को संदेश देता है कि लगन, परिश्रम, धैर्य व दृढ़ इच्छाशक्ति के बल पर लक्ष्य की प्राप्ति संभव है। पाठ के अंत में कर्नल खुल्लर द्वारा कहे गए शब्द बछेंद्री पाल द्वारा निर्मित उनकी इच्छा शक्ति के संसार को समर्पित है, 'वे बोले कि देश को तुम पर गर्व है और अब तुम ऐसे संसार में वापस जाओगी, जो तुम्हारे अपने पीछे छोड़े हुए संसार से एकदम भिन्न होगा।' (पृ. सं.30)

हिंदी — कक्षा 10

क्षितिज भाग-2, कक्षा 10 "अ" पाठ्यक्रम के लिए हिंदी की पाठ्यपुस्तक

महिला सशक्तीकरण का संदेश

हिंदी की पाठ्यपुस्तक *क्षितिज* में ऋतुराज द्वारा रचित कविता 'कन्यादान' में महिला सशक्तीकरण का महत्वपूर्ण संदेश प्राप्त होता है। कविता की निम्नलिखित पंक्तियाँ उल्लेखनीय हैं —

'माँ ने कहा पानी में झाँककर
अपने चेहरे पर मत रीझना
आग रोटियाँ सेंकने के लिए है
जलने के लिए नहीं
वस्त्र और आभूषण शाब्दिक भ्रमों की तरह
बंधन हैं स्त्री जीवन के
माँ ने कहा लड़की होना
पर लड़की जैसी दिखाई मत देना।' (पृ.सं.50)

बेटी की विदाई के अवसर पर माँ द्वारा कहे गए उपर्युक्त शब्द समाज में व्याप्त जेंडर पूर्वाग्रह, परंपरागत जेंडर भूमिकाओं, जेंडर समाजीकरण, महिलाओं की समाज में स्थिति, नारी चेतना व स्त्री विर्मश के संदर्भ में अत्यंत सारगर्भित व प्रासंगिक हैं। नारी के स्वाभाविक गुणों — स्नेह, त्याग, ममता,

करुणा, कर्त्तव्यनिष्ठा इत्यादि का त्याग किए बिना नारी की अपने अधिकारों के प्रति संचेतना अनिवार्य है। तभी वह समाज में आत्मसम्मान के साथ अपनी अस्मिता को बरकरार रख सकती है।

महावीरप्रसाद द्विवेदी द्वारा रचित लेख 'स्त्री शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन' में महिला शिक्षा का प्रबल समर्थन किया गया है व महिला शिक्षा के विरुद्ध संकीर्ण मानसिकता पर कुठाराघात किया गया है। स्वाधीनता से पूर्व रचित यह लेख विचारोत्तेजक व सामाजिक क्रांति का उद्घोषक है। लेख में स्पष्ट कहा गया है कि सामाजिक उत्थान व देश को नवीन दिशा प्रदान करने हेतु स्त्रियों का शिक्षित होना परम अनिवार्य है। (पृ.सं.103–113)

हिंदी — कक्षा 11
अंतरा भाग-1, कक्षा 11 के लिए ऐच्छिक हिंदी की पाठ्यपुस्तक

पुस्तक में संकलित पाठों में महिला रचनाकार

गद्य-खंड में कुल नौ पाठ संकलित हैं। जिनमें मात्र एक पाठ लेखिका द्वारा रचित है। अन्य आठ पाठ लेखकों द्वारा रचित हैं।

महिला सशक्तीकरण का संदेश

'ईदगाह' में जहाँ बुढ़िया अमीना का स्नेही, त्यागशील, ममत्वपूर्ण चरित्र हमें प्रभावित करता है, वहीं 'दोपहर का भोजन' में सिद्धेश्वरी द्वारा घर की निर्धनता को मुखर न होने का प्रयास पाठकों के हृदय पर अमिट छाप अंकित करना है। निम्न मध्यवर्गीय परिवार में गृहिणी किस प्रकार गृहस्थी के उत्तरदायित्व को संभाल कर पूरे परिवार को जोड़े रखती है, यह सिद्धेश्वरी के चरित्र द्वारा स्पष्ट होता है। सुधा अरोड़ा द्वारा रचित पाठ 'ज्योतिबा फुले' द्वारा सामाजिक विकास और उत्थान हेतु किए गए प्रयासों का सशक्त वर्णन करता है। पाठ में ज्योतिबा फुले द्वारा स्त्री शिक्षा के प्रयासों का उल्लेख किया गया है। उन्होंने अपनी पत्नी सावित्री बाई को शिक्षित किया और उसे केवल मराठी भाषा ही नहीं, वरन् अंग्रेज़ी लिखना-पढ़ना और बोलना भी सिखाया। पाठ की निम्नलिखित पंक्तियाँ स्त्री शिक्षा और नारी चेतना के संदर्भ में उल्लेखनीय हैं—

महात्मा ज्योतिबा फुले ने लिखा है — 'स्त्री शिक्षा के दरवाजे पुरुषों ने इसलिए बंद कर रखे हैं कि वह मानवीय अधिकारों को समझ न पाए, जैसी स्वतंत्रता पुरुष लेता है, वैसी ही स्वतंत्रता स्त्री ले तो? पुरुषों के लिए अलग नियम और स्त्रियों के लिए अलग नियम, यह पक्षपात है।' ज्योतिबा द्वारा स्त्री सशक्तीकरण के लिए किए गए प्रयासों का उल्लेख स्पष्ट रूप से पाठ में मिलता है। ज्योतिबा ने स्त्री समानता को प्रतिष्ठित करने वाली नयी विवाह-विधि की रचना की। पूरी विवाह-विधि से उन्होंने ब्राह्मण का स्थान ही हटा दिया। उन्होंने नए मंगलाष्टक (विवाह के अवसर पर पढ़े जाने वाले मंत्र) तैयार किए। वे चाहते थे कि विवाह-विधि में पुरुष प्रधान संस्कृति के समर्थक और स्त्री की गुलामगिरी सिद्ध करने वाले जितने मंत्र हैं, वे सारे निकाल दिए जाएँ। उनके स्थान पर ऐसे मंत्र हों, जिन्हें वर-वधू आसानी से समझ सकें। ज्योतिबा ने जिन मंगलाष्टक की रचना की, उनमें वधू वर से कहती है — स्वतंत्रता का अनुभव हम स्त्रियों को है ही नहीं। इस बात की आज शपथ लो कि स्त्री

को उसका अधिकार दोगे और उसे अपनी स्वतंत्रता का अनुभव करने दोगे।' यह आकांक्षा सिर्फ़ वधू की ही नहीं, गुलामी से मुक्ति चाहने वाली हर स्त्री की थी। स्त्री के अधिकारों और स्वतंत्रता के लिए ज्योतिबा फुले ने हर संभव प्रयत्न किए। (पृ.स.57–58) भारत में 3000 सालों के इतिहास में पहली बार 14 जनवरी, 1848 को पुणे में उन्होंने प्रथम कन्याशाला की स्थापना की। पाठ में स्पष्ट किया गया है कि ज्योतिबा फुले और सावित्री बाई को शूद्र लड़कियों की पाठशालाएँ खोलने में अनेक कठिनाइयों, बहिष्कारों, व्यवधानों का सामना करना पड़ा। किंतु सन् 1840 से 1890 तक दोनों ने स्त्री शिक्षा के अभियान को संपूर्ण किया। उन्होंने मिशनरी महिलाओं, किसानों और अछूतों को लड़कियों की शिक्षा के लिए प्रेरित किया। उन्होंने सामाजिक रूढ़ियों, अस्पृश्यता का विरोध करते हुए अनाथ बच्चों और विधवाओं के लिए बालहत्या प्रतिबंधक गृह में दरवाज़ों को खुलवाया। इस प्रकार उन्होंने सामाजिक परिवर्तन की नींव रखी। (पृ.सं.59)

जेंडर पूर्वाग्रह से संबंधित मुद्दे

ओमप्रकाश वाल्मीकि द्वारा रचित कहानी 'खानाबदोश' में 'मानो' के माध्यम से निर्धन वर्ग की स्त्री की विवशता को प्रस्तुत किया गया है। निर्धन मज़दूर वर्ग यदि ईमानदारी से अपना भरण-पोषण करना चाहता है तो सूबे सिंह जैसा शोषक वर्ग उन्हें शारीरिक व मानसिक रूप से प्रताड़ित करने का प्रयास करता है। भारतेंदु हरिश्चन्द्र द्वारा रचित पाठ 'भारतवर्ष की उन्नति कैसे हो सकती है?' में स्त्री शिक्षा का समर्थन किया गया। भारतेंदु हरिश्चन्द्र ने विधवा विवाह पर बल दिया और लड़कियों को ऐसी शिक्षा देने का समर्थन किया जिससे वे अपना देश और कुलधर्म सीखें।

सुदामा पांडेय 'धूमिल' की कविता 'घर में वापसी' निर्धनता की मार्मिक कथा का चित्रण करती है। साथ ही विडंबना है कि सारे रिश्ते-नाते, स्नेह और अपनत्व के बीच निर्धनता की दीवार खड़ी है।

मेरे घर में पाँच जोड़ी आँखें हैं,
माँ की आँखें पड़ाव से पहले ही
तीर्थ-यात्रा की बस के
दो पंचर पहिए हैं।
बेटी की आँखें मंदिर में दीवट पर
जलते घी के
दो दिए हैं।
पत्नी की आँखें आँखें नहीं
हाथ हैं, जो मुझे थामे हुए हैं।' (पृ.सं.177)

उपर्युक्त पँक्तियों में माँ, पत्नी और बेटी का स्नेह, प्रेमभाव, ममत्व प्रकट होता है।

अंग्रेज़ी — कक्षा 11
हॉर्नबिल

पुस्तक में संकलित पाठों में महिला रचनाकार

अंग्रेज़ी के लिए मुख्य पाठ्यपुस्तक *हॉर्नबिल* में कुल आठ पाठ हैं, जिनमें से कोई भी पाठ महिला लेखिका द्वारा नहीं लिखा गया है।

महिला सशक्तीकरण का संदेश

खुशवंत सिंह द्वारा रचित पाठ 'द पॉर्ट्रेट ऑफ़ ए लेडी' लेखक की दादी का प्रभावशाली चरित्र-चित्रण प्रस्तुत करता है। इस पाठ की प्रमुख नायिका ही लेखिका की दादी हैं। उनकी चरित्रगत विशेषताओं, जैसे — पशु-पक्षियों के प्रति स्नेह, पोते से लगाव, दयालुता, शुद्धता, पवित्रता और धार्मिकता का पाठ में प्रभावी

अंकन हैं। 'यस शी वास ब्युटिफुल। शी वास लाइक द विंटर लेंडस्केप इन द माउंटेन्स, एन एक्सपेंस ऑफ़ प्योर व्हाइट सीरीनिटी ब्रीदिंग पीस एंड कन्टेंटमेंट' (पृ.सं. 4) पाठ समय के साथ लेखक और उसकी दादी के बदलते संबंधों को मार्मिक ढंग से प्रस्तुत करता है। लेखक और उसकी दादी का गाँव से शहर की ओर स्थानांतरण, लेखक का अंग्रेज़ी माध्यम के विद्यालय में प्रवेश और उच्च शिक्षा के लिए विदेश गमन इत्यादि परिस्थितियाँ उनके रिश्तों की कड़ी को शिथिल करते जाते हैं। किंतु वह इन परिवर्तनों को सहजता से लेती हैं और स्वयं को व्यस्त रखती हैं। लेखिका की दादी उत्तम चरित्र की महिला थीं।

पाठ 'वी आर नॉट अफ्रेड टू डाई-इफ़ वी कैन ऑल बि टूगेदर' लेखक, उसकी पत्नी, दो बच्चों (एक बेटा और एक बेटी) की समुद्री यात्रा का विवरण प्रस्तुत करता है। यात्रा के दौरान जब मौसम बिगड़ जाता है और भयंकर परिस्थितियाँ उत्पन्न हो जाती हैं, उस समय लेखक की बेटी (स्यूज़न) के सिर पर बड़ी चोट लग जाती है और उसके सिर पर सूजन आ जाती है। किंतु स्यूज़न मौसम की विपरीत परिस्थितियों के मद्देनज़र अपने पिता के पास जाकर अपनी बीमारी को नहीं बताती। चूँकि उसका पिता जहाज़ पर सुरक्षा संबंधी प्रावधानों में व्यस्त है, अतएव स्यूज़न उनका उत्साहवर्धन करने हेतु उन्हें एक कार्ड देती है, जिस पर परिवार के सदस्यों के चित्र अंकित हैं। उस कार्ड में संदेश लिखा था 'ओह, हॉउ आई लव यू बोथ लेट्स सो दिस कार्ड इस टू से थैंक्यू एंड लेट्स होप फ़ोर दि बेस्ट' (पृ.सं. 17)। यह घटना विपरीत परिस्थितियों में छोटी लड़की के धैर्य, साहस और त्याग को प्रदर्शित करती है।

काव्य खंड में कुल पाँच कविताएँ संकलित हैं। कविता 'ए फ़ोटोग्राफ़' माँ और बच्चे के मध्य आत्मीयता और स्नेह के अटूट बंधन को प्रदर्शित करती है। बच्चा अपनी माँ को उसकी फ़ोटो देखकर याद करता है। माँ की मृत्यु हो जाने पर बच्चे के जीवन में व्याप्त विरक्तता को अत्यंत मार्मिक ढंग से कविता में प्रस्तुत किया गया है।

अंग्रेज़ी — कक्षा 11

स्नैपशॉट्स

कक्षा 11 की अंग्रेज़ी की पूरक पाठ्यपुस्तक *स्नैपशॉट्स* में कुल आठ पाठ संकलित हैं, जिनमें से दो पाठ जेंडर मुद्दों से प्रत्यक्ष/अप्रत्यक्ष रूप से संबंधित हैं।

महिला सशक्तीकरण का संदेश

'द अडरैस' एक छोटी कहानी है जिसमें एक बेटी द्वारा माँ की वस्तुओं को प्राप्त करने के प्रयासों का वर्णन है। कहानी में जहाँ हॉलैंड में युद्ध के पश्चात् स्वार्थ की विभीषिका का चित्रांकन है, वहीं बेटी और माँ के पारस्परिक संबंधों की ओर संकेत है। पाठ 'मदर्स डे' परिवार में माँ की स्थिति को हास्यास्पद ढंग से प्रस्तुत करता है। वस्तुत: पाठ में श्रीमती पियर्सन की परिवार में उपेक्षापूर्ण स्थिति का चित्रांकन, समाज में महिलाओं के स्नेह, त्याग, समर्पण के प्रत्युत्तर में प्राप्त उपेक्षा व तिरस्कार पर करारा व्यंग्य है। पाठ के अंत में श्रीमती फ़िट्जगेराल्ड द्वारा श्रीमती पियर्सन को दिया गया संदेश वस्तुत: महिला सशक्तीकरण की दिशा में एक सशक्त हस्ताक्षर है।

अंग्रेज़ी — कक्षा 12
फ़्लेमिंगो

जेंडर पूर्वाग्रह से संबंधित मुद्दे

मुख्य पाठ्यपुस्तक *फ़्लेमिंगो* के 'लॉस्ट स्प्रिंग — स्टोरिज़ ऑफ़ स्टोलन चाइल्डहुड' पाठ में बाल श्रमिकों की त्रासदी का प्रभावी चित्रण है। इसमें फ़िरोज़ाबाद में चूड़ियाँ बनाने वाले बाल श्रमिकों व सीमापुरी में कूड़ा बीनने वालों के जीवन की विकट परिस्थितियों का चित्रण है। किंतु बाल शोषण के शिकार बच्चों के चित्रण में बालिकाओं को उचित प्रतिनिधित्व नहीं दिया गया है। यद्यपि, पाठ में सविता, बूढ़ी महिला व चूड़ियाँ बनाने में लीन लड़कियों का उल्लेख मिलता है। किंतु यह मात्र एक-दो पंक्तियों तक सिमटा है।

पूरक पाठ्यपुस्तक *विस्टाज़* के पाठ 'मेमोरीज़ ऑफ़ चाइल्डहुड' में हाशियेकरण से अभिशप्त दो महिलाओं के बाल्यावस्था के अस्पृश्यता और शोषण संबंधी अनुभवों को अत्यंत मार्मिक ढंग से अभिव्यक्त किया गया है। पाठ दो भागों में विभक्त है। पाठ के पहले खंड में 'जिटकला-सा' के बचपन के उस अनुभव को लेखनीबद्ध किया गया है जिसमें उसके लंबे बालों को जबरन उसकी इच्छा के विरुद्ध काटा गया। यद्यपि, उनकी अपनी संस्कृति में छोटे बाल कायर व शोकग्रस्त लोगों के प्रतीक माने जाते थे। किंतु दलित शोषण के फलस्वरूप उनके लंबे बाल काट दिए गए। पाठ के दूसरे खंड में बामा, एक तमिल दलित लेखिका अपने बचपन के उस अनुभव को रेखांकित करती है, जब उसने अस्पृश्यता द्वारा प्रताड़ित मनुष्य के व्यवहार का अवलोकन किया और शिक्षा को सामाजिक गतिशीलता व आर्थिक आत्मनिर्भरता हेतु एक अभिकरण के रूप में प्रयोग किया। दलित शोषण के इस दुष्चक्र से निकलने हेतु उन्होंने शिक्षा को सशक्तीकरण का माध्यम बनाया।

जेंडर समावेशन हेतु सुझाव

जेंडर पूर्वाग्रह से संबंधित मुद्दे

- हिंदी व अंग्रेज़ी की पाठ्यपुस्तकों में जेंडर संबंधी मुद्दों को आलोचनात्मक ढंग से प्रस्तुत करना चाहिए, तभी उनसे संबंधित विविध पक्षों पर गहन व समेकित सोच का निर्माण संभव है। सामाजिक परिवर्तनों को दृष्टिगत करते हुए नवीन घटनाओं व महिलाओं की उपलब्धियों का समावेश पाठ्यपुस्तकों में करना अपेक्षित है।
- पाठ्यक्रम सुधार संबंधी परिवर्तनों के अंतर्गत विषय-वस्तु, गुणवत्ता और प्रासंगिकता की दृष्टि से परिवर्तन अपेक्षित है, ताकि जेंडर संवेदनशील पाठ्यचर्या का निर्माण संभव हो सके।

पुस्तक में संकलित पाठों में महिला रचनाकार

- महिला रचनाकारों द्वारा रचित गद्य व पद्य सामग्री को पुस्तकों में सम्मिलित किया जाना आवश्यक है ताकि रचनाकारों/साहित्यकारों के परिप्रेक्ष्य में उनका समुचित जेंडर प्रतिनिधित्व हो।

महिला सशक्तीकरण का संदेश

- यह आवश्यक है कि महिलाओं को मात्र एक गृहिणी के रूप में चित्रित कर उसके योगदान की उपेक्षा न की जाए, वरन् जीवन के विविध क्षेत्रों, यथा — उद्योग, वाणिज्य, कला, व्यापार, चिकित्सा, शिक्षा, कृषि, खेल जगत, अंतरिक्ष इत्यादि में उनके योगदान को यथोचित स्थान दिया जाए।

- हिंदी व अंग्रेज़ी की पाठ्यपुस्तकों की पाठ्यवस्तु में महिला सशक्तीकरण का संदेश विद्यमान है, किंतु अंग्रेज़ी की पाठ्युपस्तकों में यह मुखर नहीं हो पाया है। हिंदी की पाठ्यपुस्तकों में संकलित पाठों में 'हेलेन केलेर' द्वारा दिव्यांगता और 'खानाबदोश' में 'मानो' द्वारा निर्धनता, जाति व जेंडर तथा अंग्रेज़ी की पाठ्यपुस्तक में 'बामा' व 'जिटकला-सा' द्वारा दलित जाति व जेंडर के अंतर्संबंध को यथार्थ रूप में व्यक्त किया गया है। वस्तुत: हाशियेकरण पर जी रही सामाजिक-आर्थिक दृष्टि से वंचित महिलाएँ जाति, वर्ग व जेंडर — इन तीनों आधारों पर स्तरित 'त्रिस्तरीय शोषण' का शिकार होती हैं। वे सामाजिक, आर्थिक व जेंडर दृष्टि से प्रताड़ित होती हैं। इस बात की विद्यार्थियों में गहन समझ विकसित करने हेतु पाठ्यसामग्री में ज्वलंत मुद्दों व घटनाओं का समावेश अनिवार्य है।

संदर्भ

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्. 2008. *अंतरा*, कक्षा ग्यारह के लिए हिंदी की पाठ्यपुस्तक.

———. *हॉर्नबिल*, कक्षा ग्यारह के लिए अंग्रेज़ी की मुख्य पाठ्यपुस्तक.

———. *फ़्लेमिंगो*, कक्षा बारह के लिए अंग्रेज़ी की मुख्य पाठ्यपुस्तक.

———. 2007. *बाल रामकथा*, कक्षा छह के लिए हिंदी की पूरक पाठ्यपुस्तक.

———. *बाल महाभारत कथा*, कक्षा सात के लिए हिंदी की पूरक पाठ्यपुस्तक.

———. *वसंत*, भाग-एक, कक्षा छह के लिए हिंदी की पाठ्यपुस्तक.

———. *वसंत*, भाग-दो, कक्षा सात के लिए हिंदी की पाठ्यपुस्तक.

———. *वसंत*, भाग-तीन, कक्षा आठ के लिए हिंदी की पाठ्यपुस्तक

———. 2008. *विस्टाज़*, कक्षा 12 के लिए अंग्रेज़ी की पूरक पाठ्यपुस्तक.

———. 2006. *स्पर्श*, भाग-एक, कक्षा नौ के लिए हिंदी (द्वितीय भाषा) की मुख्य पाठ्यपुस्तक.

———. 2008. *स्नैपशॉट्स*, कक्षा 11 के लिए अंग्रेज़ी की पूरक पाठ्यपुस्तक.

———. 2006. *संचयन*, भाग-एक, कक्षा नौ के लिए हिंदी (द्वितीय भाषा) की पूरक पाठ्यपुस्तक.

———. 2008. *क्षितिज*, कक्षा 10 के लिए हिंदी की मुख्य पाठ्यपुस्तक.